B.A. (Part III) EXAMINATION, 2017

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक एवं निबंध

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर ध्रुवस्वामिनी का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

अभिनेयता की दृष्टि से 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का मूल्यांकन कीजिए। 15

2. नाटक तत्त्वों के आधार पर 'मुक्तिपथ' नाटक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'मुक्तिपथ' नाटक के आधार पर मीरा का चरित्र चित्रण कीजिए। 15

3. 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

डॉ. नगेन्द्र के 'कविता क्या है' विषयक विचारों की समीक्षा कीजिए। 15

4. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए– 7½+7½

(क) निबंधकार रामचन्द्र शुक्ल (ख) ललित निबंध का स्वरूप

(ग) नाटक में संवाद का स्वरूप (घ) नाटक में संकलनत्रय

(ङ) हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध भाषा।

5. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

(क) जिनकी आत्मा समस्त भेदभाव को भूलकर अत्यंत उत्कर्ष पर पहुँची हुई होती है, वे सारे संसार की रक्षा चाहते हैं–जिस स्थिति में भूमण्डल के समस्त प्राणी कीट पतंग से लेकर मनुष्य तक सुखपूर्वक रह सकते हैं, उसके अभिलाषी होते हैं, ऐसे लोग विरोध के परे होते हैं। उनसे जो विरोध रखें वे सारे संसार के विरोधी हैं, वे लोक के कंटक हैं। 10

अथवा

जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभियान यदि गलत है, तो दुःख पहुँचाने का अभिमान तो नितराम् गलत है।

(ख) नीलकण्ठ एक गंभीर दुःख की तलाश में है। दुनिया में दुःख तो बहुत है, परन्तु अगम-अगाध गंभीर दुःख बहुत ही कम। ठीक वैसे ही जैसे काम बोध की खुजलाहट तो सबके पास है, परन्तु निर्मल उदात्त प्रेम की क्षमता बिरले के ही पास होती है। काम उर्ध्वतर होता हुआ निर्मल ज्योतिष्मान् होता जाता है। वैसे ही दुःख उल्टी दिशा में गंभीर से गंभीरतर होता हुआ प्रगाढ़ और पारदर्शक होता जाता है। ऐसा पारदर्शक कि वह सार्वभौमता का दर्पण बन जाए! निर्मल, प्रसन्न और गंभीर दुःख। 10

अथवा

पर नहीं, इससे भी बड़ा एक आविद्धभाव है, किसी ने उसे गोपीभाव कहा, किसी ने राधाभाव, किसी ने महाभाव, किसी ने समष्टि चेतना, किसी ने ईश्वर में पुरानुरक्ति, किसी ने केवल प्यार, उससे बिंधना चाहता हूँ, बिंध के अपने दुर्भाव की व्यर्थता का अनुभव करना चाहता हूँ, नारीभाव की श्रेष्ठता को समझना चाहता हूँ, यह आत्म

निषेध को विधि रूप में वरण करने वाला नारी-भाव ओढ़नी ओढ़कर नाचने से नहीं आता, न आता है, अपने को राधा की सहचरी मानने से, यह केवल मिटने से आता है, चुपचाप मिटने से आता है, बेखुदा होने से आता है।

(ग) तुम सुन्दर हो, ओह कितनी सुन्दर! किन्तु सोने की कटार पर मुग्ध होकर उसे कोई अपने हृदय में डुबा नहीं सकता। फिर भी अपने लिए मैं स्वयं कितना आवश्यक हूँ, यह कदाचित तुम नहीं जानती हो। 10

अथवा

राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्वमानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना सबसे बड़ी हानि है। शकराज! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय-ज्योति का निवास है। http://www.rtuonline.com

(घ) अब शेष जो बीजा वर्गी ही बताएँगे। मैं अब तक जो इनको बराबर समझाता रहा वह तो व्यर्थ ही सिद्ध हुआ। परन्तु अब, जब स्वयं इनके हाथ जले हैं तो भ्रम टूटा है। अन्यथा पहले तो सदैव अपनी सात्विकता और धर्मप्रियता के नाम पर पकड़ में ही नहीं आते थे। मीरा की तथाकथित धार्मिकता ने जब इनके सम्मान को देखते ही देखते धूलि-धूसरित कर दिया तब जाकर बुद्धि ठिकाने लगी है। 10

अथवा

अरे, तुम्हारे प्राणों पर आये संकट को तो हमने महल की मर्यादा की रक्षा के लिए सहन कर लिया। परन्तु अब, जब हमारी स्वयं की मर्यादा संकट में पड़ गई है, तब भी यहाँ से पिण्ड छुड़ाने का समय आया कि नहीं।

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक एवं निबन्ध

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये। प्रत्येक व्याख्या 10-10 अंक की है-

(क) "अकेले यहाँ भय लगता है क्या ? बैठिये, सुनिये, मेरे पिताजी ने उपहारस्वरूप कन्यादान किया था। किन्तु गुप्त-सम्राट क्या अपनी पत्नी शत्रु को उपहार में देंगे ? (घुटने के बल बैठकर) देखिये, मेरी ओर देखिये। मेरा स्त्रीत्व क्या इतने का भी अधिकारी नहीं कि अपने को स्वामी समझने वाला पुरुष उसके लिए प्राणों का पण लगा सके ?" 10

अथवा

"राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्वास मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना सबसे बड़ी हानि है।"

(ख) ''हम शैव हैं। हमारा ईश्वर सर्वहारा का ईश्वर है, वह सबका है। वह आदि ब्रह्म है और अनन्त भी। उसकी उत्पत्ति का न कोई प्रमाण है न ही उसका अन्त ही होने वाला है। सर्वसामान्य की भाँति ही उसकी आवश्यकता है। वह मृगछाला पहनकर रह लेता है। शमशान में ही उसका निवास है।'' 10

अथवा

''हाँ, स्त्री को पर्दों के पीछे ढँककर उन्हें उन्मुक्त साँस भी नहीं लेने दिया जाता। उसकी साँस-साँस पर पहरा है पर उसके कोमल मन के नीचे ही विद्रोह की चिंगारी होती है। पति के जीवन में पिंजड़े का अभिशप्त आवास, उसकी मृत्यु पर धधकती अग्नि, यही उसकी नियति है। धर्म और कर्म दोनों पर पुरुषों का अधिकार है।''

(ग) ''एक-दूसरे की ओर आकर्षित दो हृदयों के योग से जीवन में एक नया रस उत्पन्न हो जाता है या दूनी सजीवता आ जाती है। आनन्द की संभावना भी बहुत अधिक बढ़ जाती है और दुख की भी। प्रिय के हृदय का आनन्द प्रेमी के हृदय का आनन्द हो जाता है। अत: एक ओर तो प्रिय के आनन्द का मेल हो जाने से प्रेमी संसार की नाना वस्तुओं में कई गुने अधिक आनन्द का अनुभव करने लगता है, दूसरी ओर प्रिय के अभाव में उन्हीं वस्तुओं में उसके लिए आनन्द बहुत कम या कुछ भी नहीं रह जाता है।'' 10

अथवा

''जो समझता है कि वह दूसरे का अपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दु:ख पहुँचाने का अभिमान तो नितरां गलत।''

(घ) ''दुनिया में दुख तो बहुत है, परन्तु अगम-अगाध गम्भीर दुख बहुत ही कम। ठीक वैसे ही जैसे कामबोध की खुजलाहट तो सबके पास है, परन्तु निर्मल उदास प्रेम की क्षमता बिरले के ही पास होती है। काम ऊर्ध्वतर होता हुआ निर्मल ज्योतिष्मान होता जाता है। वैसे ही दुख उलटी दिशा में गंभीर से गंभीरतर होता हुआ प्रगाढ़ और पारदर्शक होता जाता है। ऐसा पारदर्शक कि वह सार्वभौमता का दर्पण बन जाये।'' 10

अथवा

''इससे भी बड़ा एक आबिद्ध भाव है, किसी ने उसे गोपी-भाव कहा, किसी ने राधा-भाव, किसी ने महा-भाव, किसी ने समष्टि चेतना, किसी ने ईश्वर में परानुरक्ति, किसी ने केवल प्यार, उससे बिंधना चाहता हूँ, बिंधके अपने पुरुभाव की व्यर्थता का अनुभव करना चाहता हूँ, नारीभाव की श्रेष्ठता को समझना चाहता हूँ। यह आत्मनिषेध को विधिरूप में वरण करने वाला नारीभाव ओढ़नी ओढ़कर नाचने से नहीं आता, न आता है अपने को राधा की सहचरी मानने से, यह केवल मिटने से आता है, चुपचाप मिटने से आता है, बेखुद होने से आता है।''

2. ''प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी नाटक लिखकर सिद्ध कर दिया है कि उनमें मंचीय नाटक लिखने की अपूर्व क्षमता थी।'' इस कथन के आलोक में ध्रुवस्वामिनी नाटक की नाट्यकला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

अथवा

ध्रुवस्वामिनी नाटक का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए इसकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिये। 15

3. मुक्तिपथ नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मुक्तिपथ नाटक का प्रमुख स्त्रीपात्र किसे और क्यों मानते हैं ? उसका चरित्र चित्रण कीजिये। 15

4. कविता क्या है ? निबन्ध के आधार पर नगेन्द्र जी ने कविता की पहचान के लिए किन तत्त्वों पर अधिक जोर दिया है ? उसको स्पष्ट कीजिये।

अथवा

''हमारे देश की संस्कृति सारी विविधताओं के बावजूद एक है। इसी को हमारे साहित्य ने ग्रहण किया है।'' इस कथन को भारतीय साहित्य की एकता निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए– 7½+7½

(i) ''जयशंकर प्रसाद जितने कुशल कवि थे उतने कुशल गद्यकार भी थे।'' स्पष्ट कीजिए।

(ii) ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिये।

(iii) मुक्तिपथ नाटक के नामकरण पर प्रकाश डालते हुए उसके शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'चेतना का संस्कार' शीर्षक का अर्थ विश्लेषण कीजिए।

OOO